RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-04
April -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

हिन्दी कविता और दलित विमर्श

Ramita Devi

MA in Hindi (UGC NET), PGT in Hindi

ARTICLE DETAILS
Article History
Published Online: 15 April 2019

Keywords
उत्पीड़न, अस्पृश्यता, संकीर्णता, विमर्श

ABSTRACT
दलित शब्द का अर्थ है वर्ण व्यवस्था के अनुसार सबसे छोटी समझी जान वाली जाति अर्थात् शूद्र। लेकिन दलित की यह परिभाषा उचित प्रतीत नहीं होती। दलित का अर्थ है पीड़ित, शोषित चाहे वह किसी भी जाति, धर्म, नस्ल या लिंग का हो यदि उसके ऊपर अत्याचार होता है तो वह दलित होता है। दलितों की समस्याओं तथा उत्पीड़न को लेकर जो साहित्य दलितों के द्वारा लिखा गया उसे ही दलित साहित्य कहा गया। लेकिन यह सार्थक नहीं। वास्तव में दलितों के संघर्षों तथा उनकी समस्याओं के बारे में लिखे गए साहित्य को ही दलित साहित्य मानना चाहिए। यह एक कटु सच है कि जैसे समाज परिवर्तित होता है वैसे–2 साहित्य का स्वरूप भी परिवर्तित होता है।

विषयवस्तु :

दलित विमर्श का सबसे पहले प्रयोग डॉ0 भीमराव अंबेडकर जी ने किया तथा दलित समाज के उत्थान में अहम भूमिका अदा की। मुंशी प्रेमचंद जी ऐसे लेखक हैं जिन्होंने दलितों की समस्याओं, पीड़ाओं को अपने साहित्य में उकेरा है ताकि सामाजिक व्यवस्था परिवर्तित हो सके। दलित विमर्श को आगे बढ़ाने वाले साहित्यकाओं ने अस्पृश्यता, कर्मकांड, अंधविशवास, सामाजिक, धार्मिक असमानता जैसी कुरीतियों पर कुठाराघात किया है।

संविधान निर्माता डॉ0 भीमराव अंबेडकर जी ने दलितों के उत्थान के लिए सबसे पहले उनकी स्त्रतंत्रता की माँग की है –

''पहले हमको दो आजादी,
फेरि लड़ों जंगे आजादी,
लोग बहिष्कृत हैं स्वदेश में,
वंचित दलित अछूत भेष में,
भारत भूमि हमारी माता,
है स्वराज हमको भी भाता
क्यों स्वदेश में दास कहावै,
आजादी से हम क्या पावै।''[1]

सूरजपाल चौहान का नाम दलित विमर्श के साहित्यकारों में शिखर पर है। उन्होंने अपने नाटकों, कहानी, एकांकी, संस्मरण आदि में दलित विमर्श पर खुलकर लिखा है। उनके काव्य पर डॉ0 भीमराव अंबडेकर जी का प्रभाव साफ दिखाई देता है–

''कर्महीन पण्डित पुजते हैं,
उनका होता आदर मान
पढ़े लिख विद्वान भूले हो,
वाह रे वाह मेरे हिन्दुस्तान।''[2]

महेन्द्र बैनीवाल जी दलित कविता के प्रमुख कवि हैं। उनकी कविताओं में दलितों की पीड़ा सजीव रूप में मुखरित होती है। उनकी कविताओं को पढ़कर ऐसा प्रतीत होता है मानो वे दलितों की संवेदनाओं, भावनाओं को उनके अंतर्मन से निकाल अपने काव्य में ले आए हैं। महेन्द्र बैनीवाल जी दलितों को क्रांति का बिगुल बजाने के लिए प्रेरित करते हुए कहते हैं –

''टूटे हुए लोग क्या करें,
जो जुड़ने की कोशिश में,
लगातार टूट रहे हैं,
जूझने वाले भी कहाँ जाएँ
जो दिन रात जूझते हुए थक रहे हैं।
लेकिन व्यवस्था को ढोते–ढोते, जब वह आएगा
तन का सारा स्वेद
आँखों का पानी उस दिन रक्त उतर कर
कर देगा आह्वान क्रान्ति का।''[3]

नरेशचन्द्र सक्सेना जी ने दलित विमर्श पर साहित्य लिखा है। नरेशचन्द्र सक्सेना जी ने गद्य तथा पद्य दोनों विधाओं पर लेखनी चलाई है। उन्होंने इस समाज में समानता लाने का प्रयास किया है। वे चाहते हैं कि समाज में कोई पीड़ित ना रहे–

नेह करूणा प्रेम से मिल हो सजन का अब यजन,
रहे कोई नहीं भू पर विकल पीड़ित व्यक्ति मन।[4]

दलित कवि रत्नकुमार सांमरिया जी ने दलित साहित्य के बारे में विचार देते हुए बताया है कि यह हीनता तथा अपमान से परिपूर्ण साहित्य नज़र आता है। रत्नकुमार सांमरिया जी ने दलितों की टीस को अपने अंतर्मन से अनुभूत किया है। उनके दलित काव्य की सजीवता का यह मुख्य कारण है–

चाबुक से, छिली हथेली पर
मालिक को मेंहदी लगाते हुए,
देख घोड़े को होने लगता है
अपनी पीठ के दर्द का 'अहसास'।[5]

डॉ0 श्योरोज राज सिंह बैचेन जी ने दलित–विमर्श पर लिखते हुए, भूमिदार लोगों द्वारा दलितों पर किए जाने वाले अत्याचारों का मार्मिक चित्रण करते हुए लिखा है–

RRIJM 2015, All Rights Reserved

अब उसके खेत का टुकड़ा
टुकड़ा कुतरने में लगा है भूमिदार
उसकी बर्बादी का
जिम्मेदार पटवारी भी है
वह मजूरी गाँव में देख या शहर मे
हो गया आजाद घेरी पर जुल्म जारी है।

दलित विमर्श के सर्वश्रेष्ठ समीक्षक दलित समीक्षा के संस्थापक डॉ0 धर्मवीर भारती जी की कविता–

''पत्तों में पढ़ता हूँ आए दिन दंगे होते हैं,
अर्थात् अब यहाँ महान लोग जन्म नहीं लेते,
बेतार से बूचंड खाने की सूचनाएँ सुनता हूँ,
कितने अछूत कहा मून दिए और क्यों?''[6]

कंबल भारतीय ने दलित–विमर्श के चित्रण में मुख्य भूमिका निभाई। उन्होंने परंपरागत मानसिकता को परिवर्तित करने का प्रयास किया है। वे पुरातन संकीर्णता को छोड़कर नए प्रतीमान स्थापित करते हैं –

यदि बेदों में लिखा होता
ब्राह्मण ब्रह्म के पैर से हुए हैं पैदा,
उन्हें उपनयन का अधिकार नहीं,
तब तुम्हारी निष्ठा क्या होती?''

दलित–विमर्श की कोशिश सर्वथा यही प्रतीत होती है कि वो समस्त दलित वर्ग को एकत्रित करना चाहता है जब दलित एकजुट होगें तभी शोषकवर्ग के विरोध की क्रांति तीव रूप धारण करेगी। दलित क्रांति की भयंकर गर्जना शोषितों को कमजोर कर देगी। जिससे दलित समाज में सम्मान पा सकेंगे।

''आज का दलित समाज जाग उठा है यह प्रेमचंद और निराला के समय का दलित नहीं है लोकतंत्र, शिक्षा, आरक्षण से रोजगार, राजनैतिक रूप से दलितों का आभार अम्बेडकरवादी चेतना और साथ में मार्क्सवादी ज्ञान से ऐसे दलित पहले की तरह वर्ग व्यवस्था के लोहवाथ में कुचले रौदें जाने के लिए, तैयार नहीं बल्कि आगे बढ़कर प्रतिकार और प्रतिशोध करना चाहता है।''[7]

अंबेडकरवादी विचार स्त्री–विमर्श के पथ विकास में मील का पत्थर साबित हुए। दलित–साहित्य निर्माण के प्रवर्तक के रूप में डॉ0 भीमराव अंबेडकर का नाम सर्वप्रथम आता है। डॉ0 भीमराव अंबेडकर के पथ पर चलकर एक बहुत बड़ा वर्ग स्त्री–विमर्श पर साहित्य लिखने में आगे आया। ज्ञान अर्जित किए बिना दलित वर्ग की मुक्ति संभव नहीं, अन्यथा स्थिति नहीं सुधर सकेगी।

दलित–विमर्श के तहत स्त्रियों की हालत दलितों से भी दलित है जिसको दलित विमर्श में विशेष स्थान नहीं मिला जैसा कि योराज बैचेन सिंह लिखते हैं ''बेहतर होगा कि गाँधी तथा प्रेमचन्द की धारा के प्रगतिशील लोग नई शताब्दी में अम्बेडकर की धारा से जुड़कर दलित साहित्य में पूर्ण निष्ठा से योगदान दें, दलित विमर्श किसी एक जाति या कुछ जातियों का साहित्य विमर्श नहीं है बल्कि भारतीय समाज का साहित्य है।''[8]

दलित–विमर्श के साहित्य की परम्परा का बड़ी ही तेजी से विकास हुआ है। अब दलित विमर्श उस साहित्य की भी निंदा से परहेज नहीं करता जो दलितों को अपमान तथा उपहास का पात्र समझता है। दलितों का भी अस्तित्व है। दलित भी परमात्मा की कृति हैं उसको भी सम्मान का अधिकार है। कंवल भारती जी कहते हैं कि मैं डॉ0 भीमराव अंबेडकर के संघर्ष को नहीं भूला हूँ।

मैं उस अतीत को
अपने करीब पाता हूँ
जिसे जिया था तुमने अपने दृढ–संकल्प और संघर्ष से।
परिवर्तित किया था समय–
चक्र को
इस वर्तमान में।
तुम बिल्कुल नहीं मरे हो
बाबा !
जीवित हो हमारी चेतना में,
हमारे संकल्प में, हमारे
संघर्षों में

निष्कर्ष :

इस प्रकार हम देखते हैं कि हिन्दी तथा अन्य भाषाओं के भारतीय साहित्य में स्त्री–विमर्श साहित्य ने विशेष पहचान भी बनाई। इसके साथ–2 प्राचीन समय से चली आ रही रूढ़िवादी सामाजिक विचारधारा को भी परिवर्तित करने का विशेष कार्य किया। स्त्री–विमर्श विमर्श साहित्य का सीधा असर समाज की मानसिकता पर पड़ा। हम सबको पता है कि साहित्य समाज का चित्रण होता है लेकिन जो साहित्य लिखा जाता है वह समाज की दिशा तथा दशा बदलने में भी अहम् भूमिका निभाता है। अब समाज में दलितों के अधिकारों, दलित अस्मिता, दलितों की पहचान पर विचार होने लगा। समाज के आर्थिक रूप से कमजोर व्यक्ति भी स्वयं को मजबूत समझने लगे। अब समाज में फैली पुरातन मनुवादी वर्ग व्यवस्था से लोगों की आस्था खत्म हो गई। समाज का शोषण करने वाले शोषकों पर लेखकों का विशेष ध्यानाकर्षण हुआ। इसी आधार पर साहित्य दलित विमर्श मजबूत हुआ। अब दलितों ने अपने भाग्य से समझोता न करके स्वयं अपने कार्य के आधार पर अपने जीवन तथा समाज को बदलने का प्रयास किया–

मुझे ही
अपनी दिशा और दशा
की खोज में
चलना होगा
अपनी अदम्य आकांक्षाओं
के साथ
अपना रास्ता खुद बनाने

RRIJM 2015, All Rights Reserved

कदम बढ़ाना ही होगा।

संदर्भ सूची

1. रामदास निमेष भीकथा मृतम पृ0सं0 56.
2. सूरत लाल सिंह चौहान, प्रयास– पृ0सं0 58.
3. हम दलित पत्रिका (मासिक) 25 नवम्बर, 1993.
4. रामभक्त 'शबरी –नरेशचन्द्र सक्सेना, सैनिक, रामभक्त 'शबरी, सरस्वती साधना परिषद्– पृ0सं0 20.
5. उजाले की अगवानी–रत्नकुमार सामंरिया–पृ0सं0 31.
6. डॉ0 धर्मवीर हीरामन पृ0सं0 64.
7. दलित साहित्य रचना और विचार डॉ0 पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी अतिश प्रकाशन हरिनगर दिल्ली पृ0सं0 38.
8. साक्षात्कार (पत्रिका) अगस्त 2002 में लेख।

RRIJM 2015, All Rights Reserved